डॉ० अनिरुद्ध सिंह
आरखाडी महाविद्यालय

रीतिकाल का विभाजन

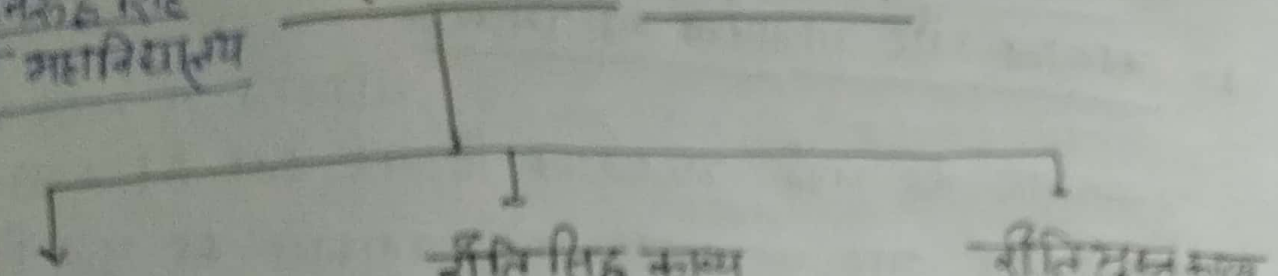

- रीतिबद्ध काव्य
  - कवि
    - केशवदास
    - मतिराम
    - भूषण
    - चिंतामणि
    - देव
    - भिखारीदास
    - पद्माकर
- रीतिसिद्ध काव्य
  - कवि
    - बिहारी
- रीतिमुक्त काव्य
  - कवि
    - घनानन्द
    - बोधा
    - आलम
    - ठाकुर
    - द्विजदेव

रीतिकाव्य की विशेषताएँ

हिन्दी कविता की विकास प्रक्रिया में 17 वीं शताब्दी के मध्य
तक आते-आते भक्ति का आवेश कम होने लगा और धीरे-धीरे
देह और जगत का निषेध करने वाली तथा सामाजिक
मर्यादा का वहन करने वाली महान भक्ति काव्यधारा के बाद
कविता देह और काम की दुनिया में चली गई। विद्वानों
ने इस काव्यधारा को सामान्यतः रीतिकाल की संज्ञा दी है।
शास्त्र और राजदरबार के दबाव में रची जाने वाली इस रीतिकाल

Scanned with CamScanner

की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं -

1- शास्त्र और आचार्यत्व का मिश्रण -

रीतिकाल में शास्त्र और रचनाकार का अपूर्व सम्मिलन दिखाई देता है। केशव, चिंतामणि, भिखारीदास और पद्माकर जैसे रचनाकारों की मूल चिंता संस्कृत काव्यशास्त्र के नियमों के आधार पर रचना करना और इस शास्त्र ज्ञान को लोकभाषा में रूपांतरित करना है। इसलिए इन कवियों को आचार्य कवि भी कहा गया है -

देव की उक्ति है -

'रसनि सार सिंगार रस प्रेम सार सिंगार।'

2- अन्तर्वस्तु के रूप में श्रृंगार का चयन -

श्रृंगारिकता रीतिकाल की केन्द्रीय धारा है। श्रृंगारिकता की यह चेतना रीतिकाल में सामंती परिवेश और शास्त्र समर्थित है। श्रृंगार के अंतर्गत रीति कवियों ने प्रेम के अनेक रूपों, हावो भावों एवं चेष्टाओं का वर्णन किया है। श्रृंगार के दोनों ही पक्षों की विस्तृत व्यंजना कविता और शास्त्र को मिलाकर रीति कवियों ने की है।

3- आलंकारिकता के प्रति अत्यधिक सजगता -

रीतिकाल में कविता कवि का लक्ष्य हो गई क्योंकि वह इस काल में रचनाकार की आजीविका का आधार बनी। सामंती बाजार तंत्र में कविता एक कविता वस्तु के रूप में ~~वर्णित~~ परिणत हुई। इसलिए कविता की अन्तर्वस्तु की तुलना में उसका रूप महत्वपूर्ण

Scanned with CamScanner

हो गया। रूप का सीधा संबंध अलंकृति से है, इसलिए कवियों ने अलंकार को कविता के शोभाकारक धर्म के रूप में नहीं बल्कि उसमें चमत्कार और चकाचौंध उत्पन्न करने के लिए अपनाना। बिहारी को दोहा उदा० के तौर पर देख सकते हैं -

"कनक कनक ते सौगुनी मादकता अधिकाय।
ऐहि पाय बौराय जग, उहि खाय बौराय ॥"

वस्तुतः अलंकरण रीतिकाव्य की एक शक्ति भी है और सीमा भी।

4- चित्रात्मक और नाद सौंदर्य - रीतिकाव्य को सभी आलोचकों ने उसकी चित्रात्मकता के महत्त्व को स्वीकार किया है। चित्रात्मकता रीतिकाव्य की अनेक सीमाओं के बीच एक ऐसी शक्ति है जो उसे समाज और उसकी रुचियों परिवर्तन के बावजूद उसके वजूद को जीवित रखती है। रीतिकाव्य में केवल दृश्य बिंबों की ही नहीं बल्कि ध्वनि बिंबों की भी अद्भुत सृष्टि की गई है। उदाहरणार्थ -

'छाजति छबीली छिति छहर- छरा को छोड़
भोर उठि आनि केलि मंदिर के द्वार पर।
एक पग भीतर सो एक देहरी पर धरै
एक कर कंज एक कर है किवार पर ॥'

5- प्रकृति-चित्रण-

रीतिकवियों का प्रकृति-चित्रण सामान्यतः उद्दीपन-विभाव के रूप में ही हुआ। बादल, चाँदनी, मलय समीर, नदी और वसंत जैसे प्राकृतिक उपादानों को रीति कवियों ने अपना विषय बनाया है।

6- प्रेमानुभूति की मांसलता-

प्रेम रीतिकाव्य का केन्द्रीय विषय है। लेकिन सामंती वातावरण के दबाव और रुचियों के कारण इन कवियों ने प्रेम को नितांत दैहिक और अनेक प्रसंगों एवं चित्रों को ही अपनी कविता में व्यक्त किया। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है - "यह प्रेम शुरू से अंत तक महत्वाकांक्षा से शून्य, सामाजिक मंगल के मनोभाव से प्रायः अस्पष्ट, पिंड-नारी के आकर्षण से हततेज और स्थूल प्रेम-व्यंजना से परिलक्षित होते हैं।"

7- वीरता और राज प्रशस्ति तथा नीति-

रीतिकाव्य के कुछ कवियों ने अपने आश्रयदाता की वीरता का भी प्रभावपूर्ण अंकन किया है। भूषण इस वीरगाथात्मक परम्परा के मूर्धन्य कवि हैं। इस दृष्टि से भूषण की निम्नांकित पंक्तियाँ उल्लेखनीय हैं-

'इंद्र जिमि जंभ पर बाड़व सुअंभ पर
त्यों मलेच्छ बंस पर सेर सिवराज है।'

Scanned with CamScanner

लौकिकता के साथ इस काल में कुछ कवियों ने नीति संबंधी रचनाएँ भी कीं। रहीम, गिरिधर और वृंद ये महत्वपूर्ण कवि रहे। इनमें से नीतिकाव्य के समर्थ रचनाकार हैं क्योंकि नीति रचनाओं में जीवन का गहरा अनुभव समाहित है। इस संदर्भ में रहीम का यह दोहा द्रष्टव्य है -

'रहिमन चुप ह्वै बैठिए, जान दिनन के फेरी
जब अच्छे दिन आएँगे, बनत न लगिहै देरि ।।'